रिश्ता

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

निगार सोचती थी कि खूबसूरती कितनी नेमत है और कभी कभी ज़हमत भी। अभी इन्टर में पढ़ रही थी और उस के रिश्ते आना शुरू हो गये थे। चचाज़ाद, फूफीज़ाद सब ही के। उस के सब ही कजेन्स मै उसे पाने के लिये एक मुक़ाबला था। उसे अब इन रिश्तों से एक उलझन सी होने लगी थी। उसने इन्टर कर लिया और यूनिवर्सटी में दाखिल हो गई। पहले ही दिन इंग्लिश का लेक्चरर अमजद उस पर किसी जिन की तरह आशिक़ हो गया। ख़ानदान के लड़कों के वार से वह बच गई थी लेकिन उस के वार से नहीं बच पाई।

इस दौरान उसका एक और रिश्ता आगया लड़के ने इन्जीनियरिंग और एम0 बी0 ए0 किया था और जद्दा में किसी बड़ी फर्म में टेक्नीकल एडवाइज़र था। इन्डिया शादी करने के लिये आया हुआ था। निगार को रिक्शे पर बैठ कर यूनिवर्सटी से घर वापस जाते देख तो किसी चुम्बक की तरह खींचा हुआ उस का घर देख आया। ख़ानदान वगैरा के बारे में पता किया गया और दूसरे दिन उस की वालिदा और बहन निगार के घर रिश्ता लेकर पहुंच गईं। अच्छा इस्मार्ट लड़का, अच्छा खनदान, अच्छी नौकरी और किया चाहिये। लेकिन निगार पर तो अमजद के प्यार का सुरूर था उसने अरब वाले रिश्ते से साफ इनकार कर दिया था। और वह बेचारा अफसुरदा वापस चला गया। और निगार की अमजद से शादी हो गई।

अमजद को जद्दा यूनिवर्सटी में अंग्रेज़ी की लेकचररशिप आफर हुई तो निगार बहुत खुश हुई। अमजद ने जद्दा यूनिवर्सटी ज्वाइन कर ली थी और कुछ महीनों में निगार की वीज़ा वगैरा की कारवाई मुकम्मल हुई तो वह भी अमजद के पास जद्दा चली गई अमजद का दो कमरों का अपार्टमेन्ट उसें बहुत छोटा लगा। उस घर में आंगन बरआमदा तो है ही नहीं उस ने मासूम सा सवाल कर दिया था। अमजद उस के सवाल को स्पार्टिन्गली नहीं ले पाया और उस ने बहुत रूखाई से निगार से कहा था अब तुम ऐसे ही छोटे से घर में रहने की आदत डाल लो। यहाँ हिन्दुस्तान की तरह बड़ा सा मकान नहीं मिलेगा।

आज अमजद और निगार की अशरफ वाहिद के घर दावत थी। अशरफ वाहिद बहुत सालों से सउदी अबर में रहते थे और लखनऊ में अमजद के पड़ोसी भी। जब अमजद और निगार उन के घर पहुंचे तो अशरफ वाहिद ने निगार को देखा तो एक गहरी सांस लेकर धम से सोफे पर बैठ गये। ये तो वही लड़की है जिसे रिक्शे पर बैठा देख कर वह उस पर आशिक हो गये थे। वहाँ लखनऊ में तो उन्होंने उस लड़की को दूर से रिक्शे पर बैठा देखा था। यहाँ वह उनके बिलकुल सामने सोफे पर बैठी हुई थी। बला की हसीन वह अमजद की क़िस्मत पर रश्क करने लगा। और निगार अशरफ वाहिद के घर की चका चौन्ध में गुम थी। बड़ा शानदार घर बहुत खूबसूरती से सजाया गया है बड़े बड़े कमरे खूबसूरत पेन्टिग से आवेज़ा।

बाहर खूबसूरत लान जिसमें धीमी धीमा सी गार्डेन लाइट पूरे घर की फिज़ा रोमान्टिक थी। अशरफ वाहिद की पर्सनाल्टी भी बहुत शानदार थी उन्होंने कई फैमिलीस को बुलाया हुआ था और उनके फुलके लतीफों से पूरी महफिल लालाज़र बनी हुई थी। निगार भी उन के किसी लतीफे पर अपनी हंसी नहीं रोक सकी थी और बेतहाशा हंसी थी। जिस पर अमजद को उस के कान में धीरे से कहना पड़ गया था। कन्ट्रोल यार।

निगार और अमजद अपने घर वापस आ गये थे। अशरफ वाहिद के घर से वापस आने के बाद निगार को अपना घर कुछ और ज़्यादा ही ख़राब लगने लगा छोटे छोटे कमरे मामूली सा फर्नीचर, ये आदमी इतना मालदार, कितना हैन्डसम उस की अब तक शादी क्यो नहीं हुई। निगार ने अमजद से डारेक्ट सवाल किया था। देखो मुझे तुम को ऐसे कहने पर ऐतराज़ है। अमजद ने बुरा मानने के अंदाज़ में कहा और निगार हंसने लगी। ये कम्बख़्त वाहिद है ही लेडी किलर। अमजद बड़बड़ाया था।

अमजद को जद्दा में रहते हुये तीन साल पूरे होने वाले थे वह लखनऊ यूनिवर्सटी से तीन साल की छुट्टी लेकर आया था और अब सोच रहा था कि लखनऊ यूनिवर्सटी में रिज़ाइन कर दें जद्दा उसे बहुत अच्छा लगा था। इस बीच अशरफ वाहिद के धर उन का बहुत आना जाना रहा। आज भी उन लोगों की अशरफ वाहिद के घर दावत थी और सिर्फ उन्ही लोगों की और कोई दूसरी फैमली नहीं इनवाइटेड थी। खाना खाने के बाद सब लाउज में बैठे गपशप कर रहे थे। हिन्दुस्तान और अस्ट्रेलिया की क्रिकेट सिरीज़ चल रही थी उस लिये क्रिकेट की ही बातें हो रही थीं। अमजद को क्रिकेट से ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी उस लिये चह ज़्यादा तर ख़ामोश थे लेकिन निगार को क्रिकेट से बहुत दिलचसपी थी इस लिये उस की और अशरफ वाहिद की अच्छी गुफतुगू हो रही थी। क्रिकेट के सारे रिकार्ड निगार के टिप्स पर थे। अच्छा अब क्रिकेट के अलावा भी कुद और बातें हो जायें अमजद ने कहा वह अपने को थोड़ा सा अलग थलग महसूस करने लगा था। और किया बातें हों आप ने कभी अशरफ साहब से नही पूछा कि उन्होंने अभी तक शादी क्यों नहीं की निगार ने अमजद से कहा। आप मुझे बीच में क्यों ला रही हैं आप खुद अशरफ से डायरेक्ट पूछ लीजिये निगर अब अशरफ वाहिद की तरफ देख रही थी। उसे महसूस हुआ कि अशरफ कुछ बेचैन से नज़र आ रहे हैं। और उस को अजीब नज़रों से देख रहे हैं। फिर वह एक दम हंसने लगे और बोले पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ एक लड़की पसंद आई थी उस के घर रिश्ता दिया लड़की ने इनकार कर दिया बस यही बहुत मुख़्तसर सी कहानी है।

वह दोनों अपने घर वापस आ गये थे। निगार कह रही थी वह कोई पागल ही लड़की रही होगी जिसने इतने अच्छे रिश्ते से इन्कार कर दिया। भला बताइये क्या कमी है उस इंसान में।

हाँ निगार तुम ठीक कह रही हो वह लड़की पागल ही थी और मुझे पागल लड़किया पसंद हैं इस लिये मैने उस से शादी कर ली। क्या मतलब तुम्हारा, मतलब ये है कि तुम जो मुझे अक्सर अपने सउदी अरब वाले रिश्ते की बात करती हो जो तुमने इनकार कर दिया था वह यही अशरफ वाहिद

थे। अरे निगार उस से ज्यादा कुछ नहीं कह पाई।

रात ज़्यादा हो गई थी। अमजद महसूस कर रहा था कि निगार बार बार करवटें बदल रही है। क्या नींद नहीं आर रही है। हाँ उसने मुख़्तसर सा जवाब दिया था। अमजद सोचने लगा ये बात उसे निगार से नहीं बताना चाहिये थी। हो सकता है उसे पछतावा हो रहा हो। उस का और अशरफ का कोई मुक़ाबला नही। कहीं वह उसे छोड़ धोका बेवफाई, नही वह उस से ज्यादा नही सोचना चाहता था, निगार अब उठकर बैठ गई और अमजद से बोली अमजद तुम से एक गुज़ारशि है मुझ से अब उस छोटे से मकान में नहीं रहा जाता पलीज़ मेरी बात मान जाओ। अमजद सोचने लगा अब बम फटने वाला है। उसे पूरा अंदाज़ा था अशरफ वाहिद अब भी दौड़ा दौड़ा निगार से शादी कर लेगा। क्या चाहती हो तुम उसने बहुत रूख़ाई से निगार से पूछा था। मैं ने तुम से कहा था न कि मुझ से अब इस छोटे से मकान में नहीं रहा जाता। प्लीज़ लखनऊ वापस चले चलो वहाँ हम लोगों का मकान इस से कहीं ज्यादा बड़ा है। अमजद ने इतमिनान की सांस ली थी। ठीक है डार्लिंग हम लोग हिन्दुस्तान वापस चलेंगे।

★★★